16. वन के मार्ग में

सवैया

पुर तें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझति हैं, "चलनो अब केतिक, पर्न कुटी करिहौ कित ह्वै?"।
तिय की लखि आतुरता पिय की, अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।

''जल को गए लक्खन हैं लरिका, परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि-डाढ़े।।"
तुलसी रघुबीर प्रिया स्रम जानि कै बैठि बिलंब लौ कंटक काढ़े।
जानकी नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।।

❑ *तुलसीदास*

(कवितावली – अयोध्या कांड से)

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. प्रथम सवैया में कवि ने राम-सीता के किस प्रसंग का वर्णन किया है?
2. वन के मार्ग में सीता को होने वाली कठिनाइयों के बारे में लिखो।
3. सीता की आतुरता देखकर राम की क्या प्रतिक्रिया होती है?
4. राम बैठकर देर तक काँटे क्यों निकालते रहे?
5. सवैया के आधार पर बताओ कि दो कदम चलने के बाद सीता का ऐसा हाल क्यों हुआ?
6. 'धरि धीर दए' का आशय क्या है?

अनुमान और कल्पना

- अपनी कल्पना से वन के मार्ग का वर्णन करो।

भाषा की बात

- लखि – देखकर धरि – रखकर
  पोंछि – पोंछकर जानि – जानकर

  ऊपर लिखे शब्दों और उनके अर्थ को ध्यान से देखो। हिंदी में जिस उद्देश्य के लिए हम क्रिया में 'कर' जोड़ते हैं, उसी के लिए अवधी में क्रिया में ि (इ) को जोड़ा जाता है, जैसे अवधी में बैठ + ि = बैठि और हिंदी में बैठ + कर = बैठकर। तुम्हारी भाषा या बोली में क्या होता है? अपनी भाषा के ऐसे छह शब्द लिखो। उन्हें ध्यान से देखो और कक्षा में बताओ।

ध्यान देने योग्य शब्द

पुर	–	नगर, किला
निकसी	–	निकली
बधू	–	बहू
धरि	–	धारण करके
धीर	–	धैर्य, धीरज
दए	–	रखना, धरना
मग	–	रास्ता
डग	–	कदम
द्वै	–	दो
झलकीं	–	दिखाई दी
भाल	–	ललाट
कनी	–	बूँदें
पुट	–	होंठ
बूझति	–	पूछती है
केतिक	–	कितना
पर्न कुटी	–	पत्तों की बनी छाजन वाली कुटिया
कित	–	कहाँ
तिय	–	पत्नी
आतुरता	–	व्याकुलता
चारु	–	सुंदर
लरिका	–	लड़का

परिखौ	–	प्रतीक्षा करना
छाँह	–	छाँव, छाया
ठाढ़े	–	खड़ा होना
पसेउ	–	पसीना
भूभुरि	–	गरम रेत
विलंब	–	देर
कंटक	–	काँटा
काढ़ना	–	निकालना
बिलोचन	–	नेत्र